Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 2, March–2021, (Special Issue), ISSN 2230-7540

अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर सोशल मीडिया की प्रभावशीलता

डॉ. कल्पिना सेंगर[1*], अनुराधा कुमावत[2]

[1] प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, अपेक्सsविश्वविद्यालय, जयपुर

[2] रिसर्च फैलो, शिक्षा विभाग, अपेक्सा विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश - *प्रस्तुत शोध पत्र अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर सोशल मीडिया की प्रभावशीलता ज्ञात करने हेतु किया गया है। शोध जयपुर जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में किया गया है। जिसमें कुल 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। शोध में तथ्यों का संकलन स्वनिर्मित मापनी हेतु किया गया है।*

----------X----------

प्रस्तावना

संदेश प्रसारण का तंत्र अर्थात् संचार तंत्र, मीडिया शब्द का जनक शब्द है मीडियम अर्थात् माध्यम। मीडिया इसी शब्द का बहुवचनीय रूप है। मीडिया अथवा जनसंचार माध्यम किसी भी समाज या देश की वास्तविक स्थिति के प्रतिबिंब होते हैं। देश के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर क्या कुछ घटित हो रहा है? इससे आम जन मीडिया के द्वारा ही परिचित होते हैं। जनसंचार माध्यमों के विभिन्न रूपों ने आज दुनिया के लगभग हर कोने तक अपनी पहुँच बना रखी है। मीडिया की शक्ति का आंकलन उसकी व्यापक पहुँच के मद्देनजर किया जा सकता है लेकिन इतनी शक्तियों और लगभग स्वतंत्र होने की वजह से मीडिया की देश और समाज के प्रति महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ भी है, इसलिए लोकतंत्र के तीन स्तम्भ व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बाद मीडिया को चौथा स्तम्भ माना जाता है।

संचार सभी मानवीय अन्तः क्रियाओं के सम्प्रेषण का प्रमुख आधार है। संचार की प्रक्रिया के अभाव में एक स्वस्थ सामाजिक जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। संचार की प्रक्रिया से तात्पर्य उन सभी तरीकों, साधनों और क्रियाओं से होता है जिनके द्वारा कोई भी व्यक्ति या समूह किसी अन्य व्यक्ति या समूह को अपनी अभिव्यक्तियों, विचारों एवं भावनाओं से अवगत कराता है। आधुनिक युग में संचार की प्रक्रिया एवं तकनीक में प्रचुर मात्रा में प्रगति हुई जिसने मानव के मूक अभिव्यक्ति से लेकर मौखिक संवाद तक का सफर तय किया। मुद्रण के क्षेत्र से लेकर टेलीग्राफी, टेलीविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट और यहाँ तक कि उपग्रह जगत तक पहुँचने वाले जटिल मार्गों तक की जानकारी संचार माध्यम से उपलब्ध है। मानव विकास की प्रगति एवं उत्थान प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से संचार की ही देन है। जनसंचार को ऐसे विस्तृत संगठनों के रूप में परिभाषित किया जाता है जिन्हें प्रिंट मीडिया, रेडियो या टेलीविजन इंटरनेट, ऑडियो एवं वीडियो जैसी तकनीकों में से किसी एक या अधिक का अधिसंख्य व्यक्तियों के साथ संप्रेषण के लिए प्रयोग किया जाता है। वर्तमान में जनसंचार के साधनों के अध्ययन का विशेष महत्व है। इन साधनों की समाजीकरण में विशिष्ट भूमिका होती है। ये साधन लोकप्रिय संस्कृति और जनतंत्र निर्माण के प्रमुख स्त्रोत है। समाज पर इनके गहरे सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक और वैश्विक प्रभाव पड़ते है।

औचित्य

वर्तमान में सोशल मीडिया युवाओं के मोबाइल में पहुँच चुका है। जिससे युवा अपने विचारों को एक मंच तो देते ही है साथ ही वह सोशल मीडिया द्वारा प्रभावित भी होते है। ऐसे में यह प्रभाव उनकी संस्कृति, भाषा, रहन-सहन और व्यवहार पर भी पडता है। इसका प्रभाव सामाजिक मूल्यों पर हो रहा है। इसलिए इस विषय पर यह शोध किया गया है।

शोध के उद्देश्य

1. मीडिया की प्रभावशीलता का अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के संबंध में अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

1. सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
2. सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
3. सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
4. सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी तथा ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्रों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
5. सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी तथा ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों की छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध में सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है। तथ्य संकलन हेतु स्वनिर्मित मापनी का उपयोग किया गया है।

शोध में यादृच्छिक न्यादर्श द्वारा जयपुर जिले के 200 ग्रामीण और 200 शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिसमें 100-100 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है।

शोध में टी टेस्ट द्वारा विश्लेषण किया गया है।

परिकल्पना 1

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी – 1

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	क्रांतिक अनुपात (Critial Ratio)	सार्थकता स्तर	
					0.05 स्तर	0.01 स्तर
ग्रामीण विद्यार्थी	200	22.5	16.91	2.84	अस्वीकृत	अस्वीकृत
शहरी विद्यार्थी	200	18.95	4.97		सार्थक अंतर है।	

df = N1+N2-2

200+200-2 = 398

पी वेल्यू 0.0046

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव संबंधी तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान क्रमशः 22.5 तथा 18.95 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन क्रमशः 16.91 तथा 4.97 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 2.84 प्राप्त हुआ। डीएफ 398 स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 स्तर पर सार्थकता मान 1.65 एवं 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 2.33 है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से अधिक है अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होने का कारण है कि शहरी विद्यार्थियों के

पास सोशल मीडिया के माध्यम अधिक आसानी से उपलब्ध हो जाते है जिससे वह उनसे अधिक प्रभावित होते है। इस आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना 2

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी – 2

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	क्रांतिक अनुपात (Critial Ratio)	सार्थकता स्तर	
					0.05 स्तर	0.01 स्तर
ग्रामीण छात्र	100	20.6	4.13	1.59	स्वीकृत	स्वीकृत
ग्रामीण छात्रा	100	24.4	23.47		सार्थक अंतर नहीं है।	

df = N1+N2-2

100+100-2 = 198

पी वेल्यू 0.112

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र व छात्राओं के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव संबंधी तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान क्रमशः 20.6 तथा 24.4 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन क्रमशः 4.13 तथा 23.47 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 1.59 प्राप्त हुआ। डीएफ 198 स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 स्तर पर सार्थकता मान 1.65 एवं 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 2.34 है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से कम है अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इसका कारण है कि ग्रामीण छात्र और छात्रा दोनों के पास समान परिस्थितियों में सोशल मीडिया से जुड़ने के सीमित साधन प्राप्त होते है जिससे दोनों इससे समान रूप से प्रभावित होते है। इस आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना 3

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी – 3

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	क्रांतिक अनुपात (Critial Ratio)	सार्थकता स्तर	
					0.05 स्तर	0.01 स्तर
शहरी छात्र	100	17.94	4.94	3.04	अस्वीकृत	अस्वीकृत
शहरी छात्रा	100	19.96	4.44		सार्थक अंतर है।	

df = N1+N2-2

100+100-2 = 198

पी वेल्यू 0.0027

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र व छात्राओं के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव संबंधी तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान क्रमशः 17.94 तथा 19.96 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन क्रमशः 4.94 तथा 4.44 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 3.04 प्राप्त हुआ। डीएफ 198 स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 स्तर पर सार्थकता मान 1.65 एवं 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 2.34 है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से अधिक है अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इसका कारण है कि सोशल मीडिया का अधिकांश उपयोग शहरी छात्राऐं अधिक करती है वह सोशल मीडिया साइट्स पर अधिक सक्रिय रहती है अतः शहरी छात्राओं में सोशल मीडिया का प्रभाव छात्रों की तुलना में अधिक पडता है। इस आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना 4

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी तथा ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्रों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी – 4

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	क्रांतिक अनुपात (Critial Ratio)	सार्थकता स्तर	
					0.05 स्तर	0.01 स्तर
ग्रामीण छात्र	100	20.6	4.13	4.13	अस्वीकृत	अस्वीकृत
शहरी छात्र	100	17.94	4.94		सार्थक अंतर है।	

df = N1+N2-2

100+100-2 = 198

पी वेल्यू 0.0001

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के छात्रों के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव संबंधी तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान क्रमशः 20.6 तथा 17.94 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन क्रमशः 4.13 तथा 4.94 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 4.13 प्राप्त हुआ। डीएफ 198 स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 स्तर पर सार्थकता मान 1.65 एवं 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 2.34 है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से अधिक है अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इसका कारण है कि शहरी छात्रों के पास ग्रामीण छात्रों की तुलना में सोशल मीडिया के माध्यम अधिक है जिससे शहरी छात्रों पर इसका नकारात्मक प्रभाव अधिक पडता है। इस आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी तथा ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्रों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना 5

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी तथा ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों की छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी – 5

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	क्रांतिक अनुपात (Critial Ratio)	सार्थकता स्तर	
					0.05 स्तर	0.01 स्तर
ग्रामीण छात्रा	100	24.4	23.47	1.85	अस्वीकृत	स्वीकृत
शहरी छात्रा	100	19.96	4.44		सार्थक अंतर नहीं है।	

df = N1+N2-2

100+100-2 = 198

पी वेल्यू 0.064

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों की छात्राओं के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव संबंधी तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान क्रमशः 24.4 तथा 19.96 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन क्रमशः 23.47 तथा 4.44 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 1.85 प्राप्त हुआ। डीएफ 198 स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 स्तर पर सार्थकता मान 1.65 एवं 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 2.34 है। यह सार्थकता के 0.05 स्तर से अधिक और 0.01 स्तर से कम है अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इसका कारण है कि ग्रामीण छात्रा और शहरी छात्राओं के पास समान स्तर पर ही सोशल मीडिया के माध्यम उपलब्ध होते है अतः दोनों पर इसका प्रभाव भी समान स्तर पर ही पडता है। इस आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी तथा ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों की छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष

परिकल्पना 1

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध में सोशल मीडिया का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में

सार्थक अंतर ज्ञात हुआ है। तथ्यों से ज्ञात होता है कि सामाजिक मूल्यों से जुडे तथ्यों यथा पारिवारिक जुड़ाव, सोशल साइट्स पर मित्रता, सामाजिक मुद्दों पर राय आदि के संदर्भ में शहरी विद्यार्थियों पर अधिक प्रभाव देखा गया है इसका कारण यह भी है कि शहरी क्षेत्र में इंटरनेट सेवा, मोबाइल, साइबर कैफे की उपलब्धता आसानी है जो ग्रामीण क्षेत्र में नहीं हो पाती। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी अधिक सुगमता से इंटरनेट के माध्यम से सोशल मीडिया का उपयोग ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक करते है। अतः सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में शहरी विद्यार्थियों में अधिक प्रभाव पाया गया है।

परिकल्पना 2

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध में परिकल्पना सोशल मीडिया का ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र व छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है अतः यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई। तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण छात्रों पर सोशल मीडिया का प्रभाव अधिक दृष्टिगत होता है। ग्रामीण छात्रों के सामाजिक मूल्यों में ग्रामीण छात्राओं की तुलना में अधिक प्रभाव इसलिए दृष्टिगत होता है क्योंकि छात्रों के पास इंटरनेट और मोबाइल की सुविधा तुलनात्मक रूप से अधिक आसान है। इसके कारण ग्रामीण छात्रों में बड़ों का आदर, मित्रों की संख्या, परिवार से जुड़ाव व सामाजिक मुद्दों पर अधिक जागरूक पाए गए वहीं उनके सामाजिक मूल्यों का हास भी अधिक पाया गया है।

परिकल्पना 3

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध में परिकल्पना सोशल मीडिया का शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र व छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया है अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत हुई है। शोध में तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी छात्रों का सोशल मीडिया के कारण सामाजिक मूल्यों का हास अधिक हो रहा है वह अपने बड़ों की, परिवारजनों की आज्ञा पालन नहीं करते है, वह सामाजिक अफवाहों का शिकार अधिक होते है तथा मित्रता और सफलता के संदर्भ में वे अधिक मतलबी और व्यक्तिपरक होते जा रहे है। यह प्रभाव शहरी छात्राओं पर भी दृष्टिगत होते है परंतु इन पर सोशल मीडिया का प्रभाव शहरी छात्रों की तुलना में कम है।

परिकल्पना 4

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी तथा ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्रों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध में परिकल्पना सोशल मीडिया का शहरी तथा ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्रों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया है अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत हुई है। शोध के तथ्यों से निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण छात्रों के पास शहरी छात्रों की तुलना में इंटरनेट सुविधा कम है साथ ही आज भी ग्रामीण समाज शहरी समाज की तुलना में आधुनिकता से दूर है। ग्रामीण समाज में आज भी सामाजिक व पारिवारिक मूल्यों का पालन किया जाता है। ग्रामीण समाज में संयुक्त परिवार होने से ग्रामीण छात्रों के सामाजिक मूल्यों का हास कम हुआ है जबकि शहरी क्षेत्र में बढ़ते एकाकीपन और एकल परिवारों के कारण शहरी छात्र अधिक समय सोशल मीडिया पर गुजारते है और इसका परिणाम है कि शहरी छात्रों के सामाजिक मूल्यों का अधिक हास हो रहा है।

परिकल्पना 5

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी तथा ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों की छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध में सोशल मीडिया का शहरी तथा ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों की छात्राओं के सामाजिक मूल्यों मे कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है अतः यह

परिकल्पना स्वीकृत होती है। तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि 0.05 स्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकृत भी है अर्थात् ग्रामीण और शहरी छात्राओं में अंतर अधिक नहीं है। ग्रामीण छात्राऐं परिवार और ग्रामीण समाज के पुरूष प्रधान समाज में रहती है जहां उन्हें मोबाइल और इंटरनेट की सुविधा नहीं मिल पाती है जबकि शहरी छात्राओं को ग्रामीण छात्राओं की तुलना में बहुत अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है। जिसके कारण शहरी छात्राओं के सामाजिक मूल्यों पर सोशल मीडिया का प्रभाव अधिक पड़ रहा है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. प्रस्तुत शोध द्वारा प्राप्त सोशल मीडिया के सामाजिक व नैतिक मूल्यों पर प्रभाव से संबंधित निष्कर्षों का लाभ शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थाओं के प्राचार्यों/अध्यापक प्रशिक्षक/विद्यार्थियों और एम.एड. प्रशिक्षणार्थियों द्वारा लिया जा सकेगा।

2. प्रस्तुत शोध में प्राप्त सोशल मीडिया के सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव के प्रति जागरूकता के परिप्रेक्ष्य में निष्कर्षों का लाभ विद्यार्थियों के साथ अध्यापक प्रशिक्षक अपने दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकेंगे।

3. शिक्षण संस्थाओं के अध्यापक प्रशिक्षकों को प्रस्तुत शोध का ज्ञान देकर उनमें शिक्षण के क्षेत्र में नवीन ऊर्जा व सोशल मीडिया के माध्यमों का लाभ प्राप्त होगा साथ ही वह विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों से बचाते हुए उन्हें उचित सामाजिक व नैतिक मूल्य प्रदान कर सकेंगे।

4. प्रस्तुत शोध में प्राप्त सोशल मीडिया की समस्या से संबंधित निष्कर्षों का लाभ अध्यापक प्रशिक्षकों और विद्यार्थियों के व्यवहार में सकारात्मक सुधार होगा।

शिक्षकों व विद्यार्थियों हेतु सुझाव

1. शिक्षकों को सोशल मीडिया के क्षेत्र में जागरूक होना चाहिए जिससे वह इसके नकरात्मक प्रभावों से विद्यार्थियों को दूर रख सके।

2. सोशल मीडिया के प्रभावों से संबंधित कार्यशाला आयोजित की जानी चाहिए।

4. शिक्षकों को सोशल मीडिया के साथ इंटरनेट का उचित ज्ञान होना चाहिए ताकि वर्तमान शिक्षा में क्रियात्मक रोचक एवं अधिगम्य बन सके।

6. सोशल मीडिया पर सामूहिक परिचर्चा कर विशेषज्ञों के अनुभव को स्वीकार करना चाहिए।

7. विद्यार्थियों को शिक्षकों की सहायता से सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

8. समय-समय पर विद्यार्थियों की सोशल मीडिया के उपयोग को लेकर काउंसलिंग होनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दनाह, बॉयड, (2007) 'सोशल नेटवर्क साइट्स: डेफिनेशन, हिस्ट्र एण्ड स्कॉलरशिप', अमेरिका, जर्नल ऑफ कम्प्यूटर मेडिएटेड कम्यूनिकेशन, 13 (1)

2. दनाह, बॉयड, (2006) 'फ्रेंड्स, फ्रेंडस्टर्स एण्ड माइ स्पेस', फ्रांस, फर्स्ट मंडे, 11 (12)

3. इलिसन, निकॉल, (2007) 'द बेनिफिट ऑफ फेसबुक फ्रेण्ड', फ्रांस, जर्नल ऑफ कम्प्यूटर मेडिएटेड कम्यूनिकेशन, 12 (4)

4. दत्ता, सौमित्र, (2008) 'थ्रोइंग शिप इन द बोर्डरूमः हाउ ऑनलाइन सोशल नेटवर्किंग विल ट्रांसफ्रॉम योअर लाइफ, वर्क एण्ड वर्ल्ड', लंदन, विली पब्लिकेशन

5. दनाह, बॉयड, (2007) 'व्हाय यूथ यूज सोशल नेटवर्किंग साइट्स', दिल्ली, डिजीटल मीडिया खंड, एमआईटी प्रेस

6. केन्टर, जॉन; (2000) "मम्मी आय एम स्केअर्ड" वेटपोर्ट सिटी, प्रेजर पब्लिकेशन,

7. केन्टर, जॉन; (2014) ''साइकोलॉजीकल इम्पेक्ट ऑफ मीडिया वॉयलेन्स ऑन चिल्ड्रन एण्ड टीनएजर्स'' न्यूयार्क, द जर्नल ऑफ रॉयल एंथ्रोपॉलोजी

Corresponding Author

डॉ. कल्पूना सेंगर*

प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, अपेक्सलविश्वविद्यालय, जयपुर